देव यज्ञ करने की विधि

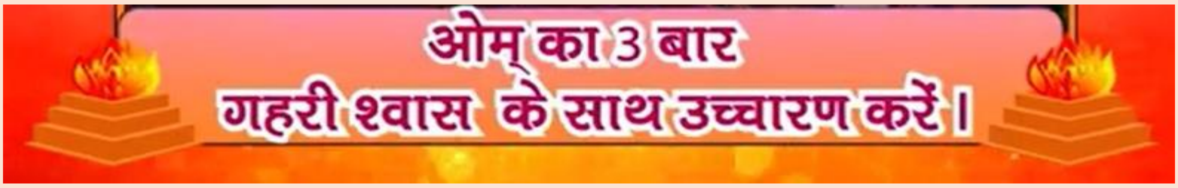

<u>आचमन मंत्र</u> – दाहिने हाथ में जल लेकर तीन आचमन करें।

पुनश्च हस्त प्रक्षालन करें।

<u>अंग स्पर्श-</u> बाएँ हाथ में जल लेकर (दाहिने से बाएँ) निम्न मंत्रों से अंगों का स्पर्श करें।

अथ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

निम्न मंत्रों से ईश्वर की उपासना करेंगे।

ओम्
विश्वानि देव
सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रन्तन्न आ सुव॥१॥
(यजु-३०.३)

ओम्
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां
कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥२॥ (यजु-१३.४)

ओम्
यऽआत्मदा बलदा यस्य
विश्वऽउपासते प्रशिषं
यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य
मृत्युः कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥३॥
(यजु-२५.१३)

ओम्
यः प्राणतो निमिषतो
महित्वैकऽइद्राजा जगतो बभूव।
यऽईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः
कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥४॥

ओम्
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च
दृढा येन स्व स्तभितं
येन नाकः।
योऽअन्तरिक्षे रजसो
विमानः कस्मै
देवाय हविषा विधेम॥५॥
(यजु-३२.६)

ओम्
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो
विश्वा जातानि परि
ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो
अस्तु वयं स्याम पतयो
रयीणाम्॥६॥
(ऋ.-१०.१२१.१०)

ओम्
स नो बन्धुर्जनिता स
विधाता धामानि वेद
भुवनानि विश्वा।
यत्र
देवाऽअमृतमानशानास्तृतीये
धामन्नध्यैरयन्त॥७॥
(यजु-३२.१०)

ॐ
अग्ने नय सुपथा
रायेऽअस्मान्विश्वानि देव
वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो
भूयिष्ठां ते
नमऽउक्तिं विधेम॥८॥
(यजु-४०.१६)

इति ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

अथ दीप प्रज्ज्वलनं – ॐ भूर्भुवः स्वः

(इस मंत्र का उच्चारण करते हुए दीप प्रज्ज्वलित करेंगे)

अग्नि स्थापन मंत्र

अग्निस्थापन-मन्त्र
भूर्भुवः स्वर् द्यौरिव
भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि
पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे॥

देवो का आह्वान करेंगे

उद्बुध्यस्वाग्ने
प्रति जागृहि
त्वमिष्टापूर्त्ते
सꣳसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्
विश्वे देवा
यजमानश्च सीदत॥

समिधाधान

पंचघृताहुति मंत्र - निम्न मंत्र से पाँच घृत की आहुतियाँ देंगे।

ॐ अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रम्हवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।। इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम् ।।

तत्पश्चात निम्न मंत्र के साथ ईशान-आग्नेय-नैऋत्य-वायव्य से ईशान कोण तक जल सिंचन करेंगे।

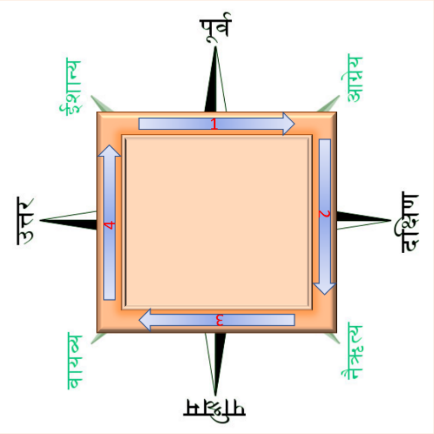

आघारावाज्यभागाहुति

निम्न मंत्रों के साथ यज्ञाग्नि में चार आहुतियाँ देंगे।

कालानुसार आहुति मंत्र – निम्न मंत्रों से कालानुसार चार आहुतियाँ देंगे।

उभयकालीन मंत्र – निम्न मंत्रों से उभयकालीन चार आहुतियाँ देंगे।

प्रार्थना मंत्र – निम्न मंत्रों से उभयकालीन तीन आहुतियाँ देंगे।

गायत्री मंत्र – तत्पश्चात गायत्री मंत्र से संकल्पानुसार आहुतियाँ देकर यज्ञ की पूर्णाहुति करेंगे।

विश्व कल्याण की कामना एवं शांति मंत्र –

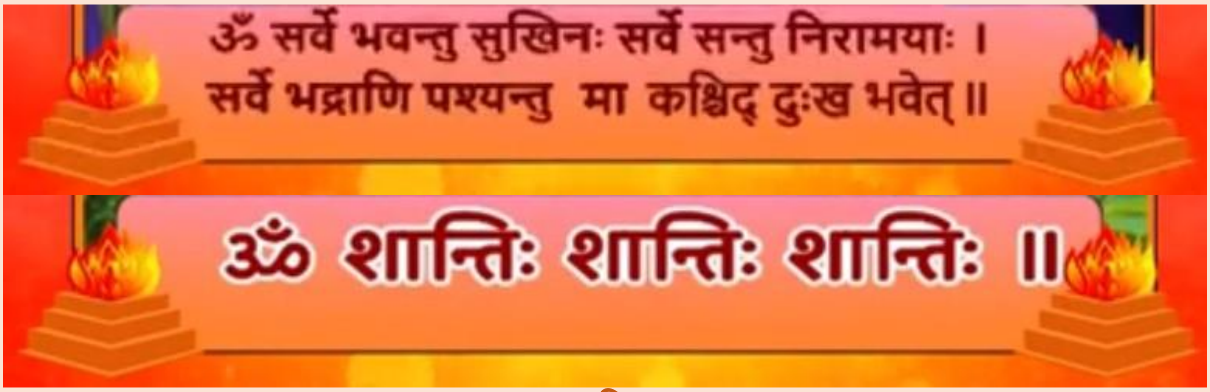

इति

नोट :- यह लघु पुस्तिका स्वामी यज्ञदेव जी के वीडियो (लिंक) के आधार पर देव यज्ञ में आम जन के सहायतार्थ बनायी गई है। इसका कोई आर्थिक निहितार्थ नहीं है।